एकलव्य

अशरफ़ का उड़नखटोला

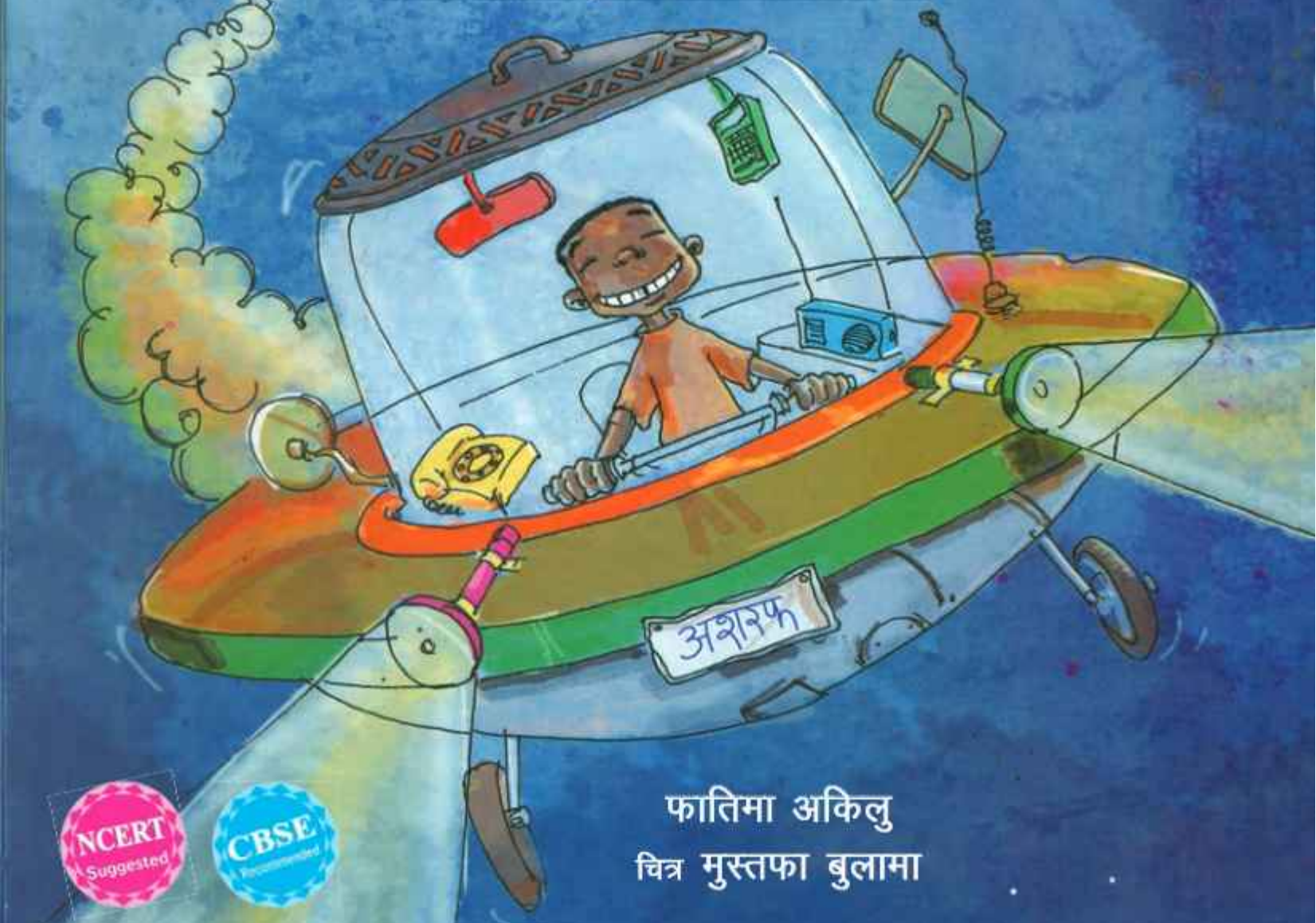

फातिमा अकिलु
चित्र मुस्तफा बुलामा

NCERT Suggested
CBSE Recommended

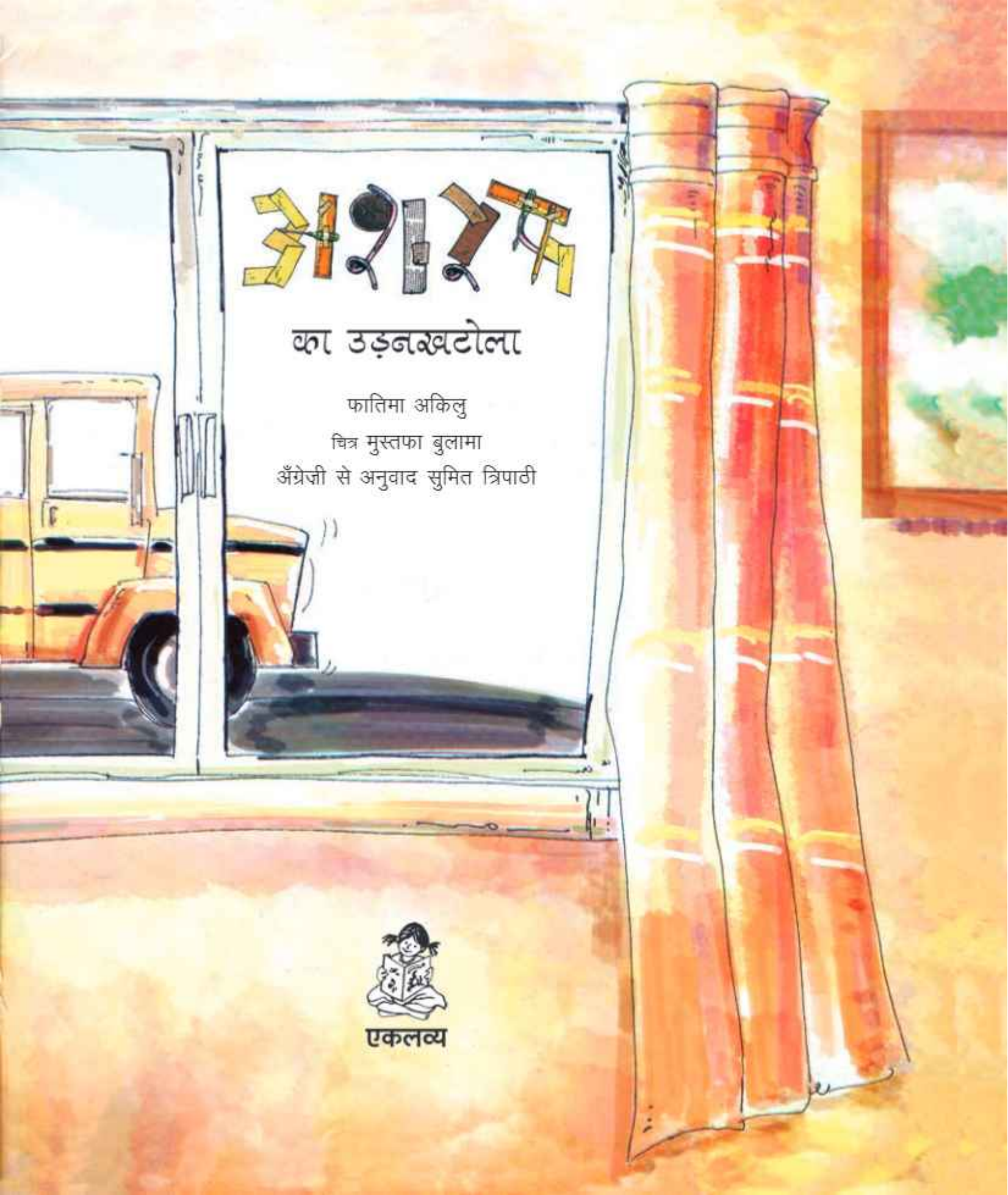

अशरफ का उड़नखटोला

फातिमा अकिलु

चित्र मुस्तफा बुलामा

अँग्रेज़ी से अनुवाद सुमित त्रिपाठी

एकलव्य

और दिनों जैसा ही वह दिन भी शुरू हुआ। बस एक फर्क था: अशरफ आज जल्दी में था। उसने फटाफट नाश्ता किया, फटाफट बस्ता उठाया और फटाफट स्कूल बस पकड़ने को भागा।

बाकी सब धीरे-धीरे हो रहा था। अशरफ ने देखा, बस की ड्राइवर अदा का पैर एक्सलरेटर को छू भर रहा था। वह तो सोचे बैठी थी कि आज सबकुछ आराम-आराम से करेगी।

आखिर जब स्कूल की ठिगनी, भूरी इमारत दिखी तो अशरफ आगे की ओर लपका।

"जल्दबाज़ी नहीं," अदा ने हड़काया। "पहले बस को पूरा रुकने तो दो।"

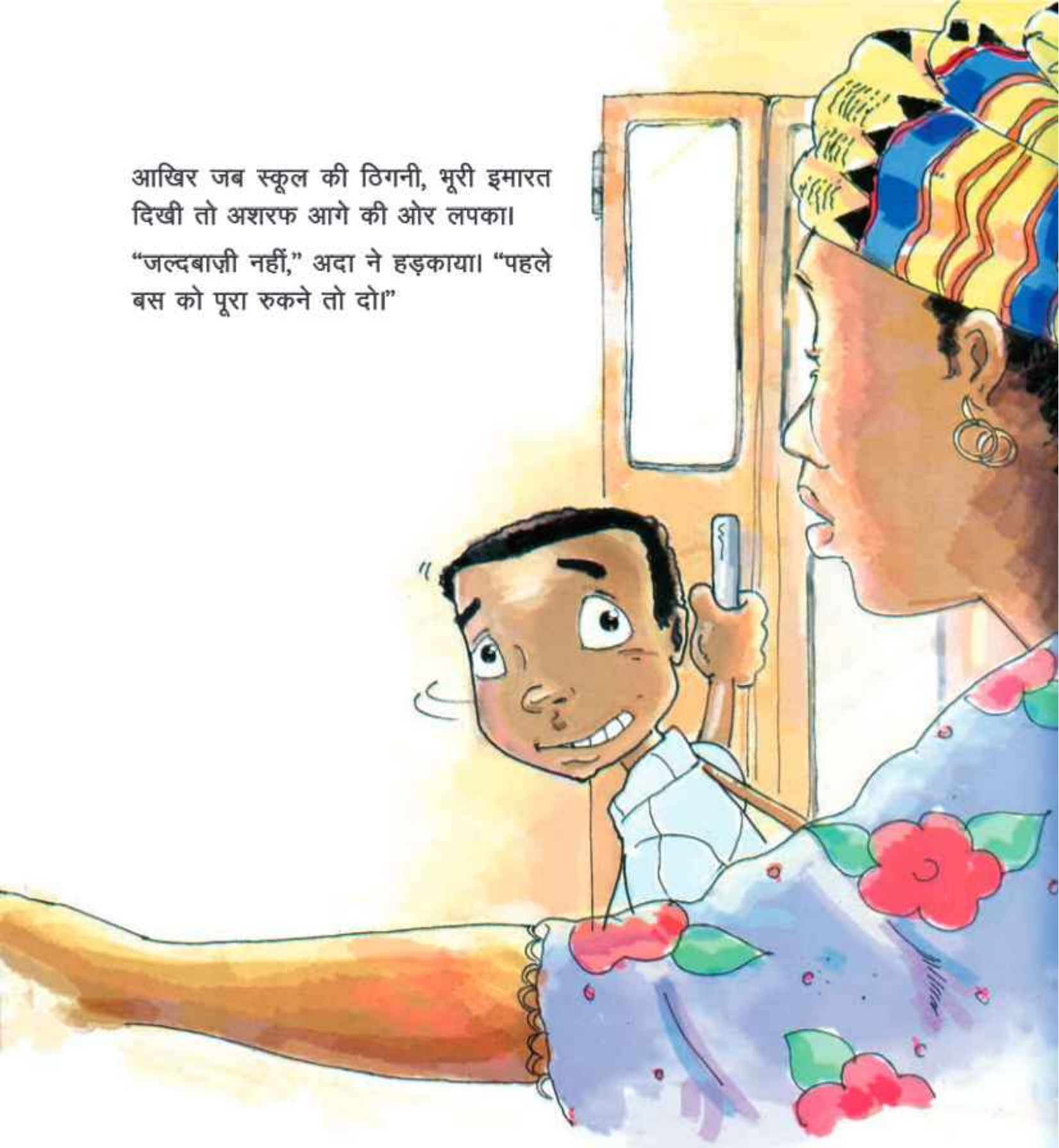

"सॉरी अदा, मुझे फौरन क्लास पहुँचना है," कहता हुआ वह बस से कूदकर क्लास की ओर भागा।

पहला घण्टा विज्ञान का था, पर अशरफ कुछ सुन-वुन नहीं रहा था। उसकी नज़र तो घड़ी पर थी। इन्तज़ार था 11 बजे की पहली छुट्टी का।

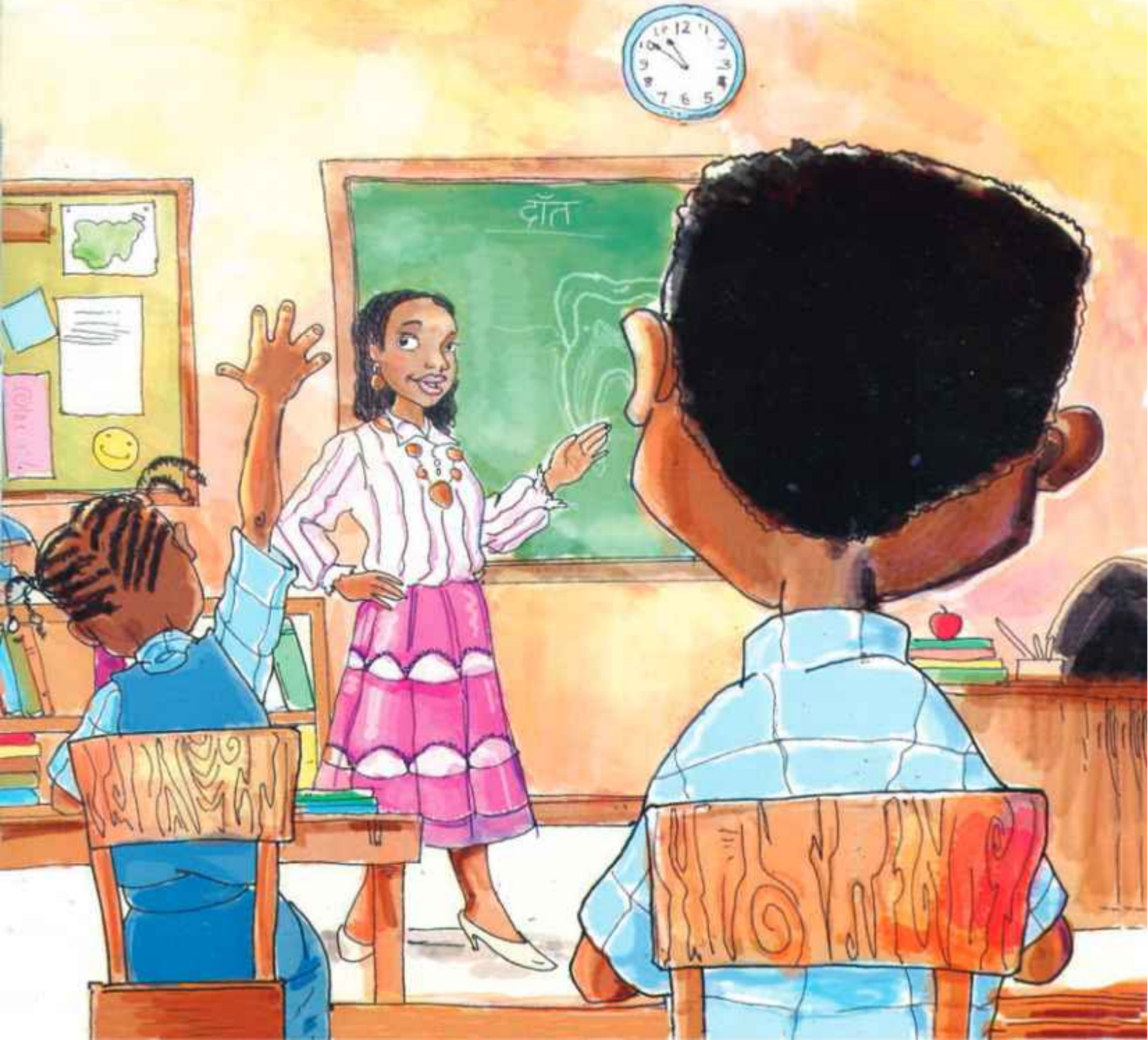

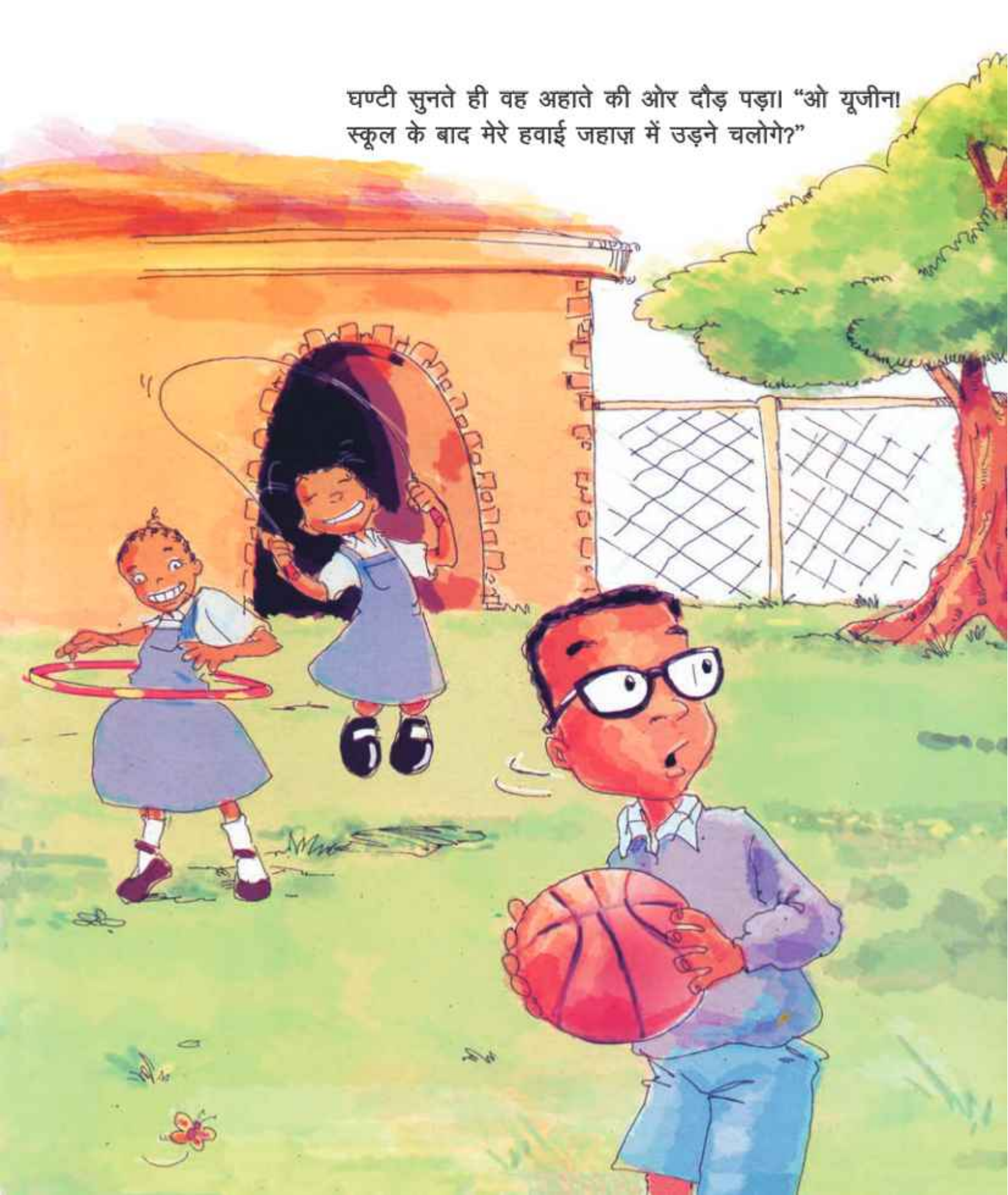

घण्टी सुनते ही वह अहाते की ओर दौड़ पड़ा। "ओ यूजीन! स्कूल के बाद मेरे हवाई जहाज़ में उड़ने चलोगे?"

"कैसा हवाई जहाज़? सेगुन इधर आना," यूजीन ने ज़ोर से पुकारा। "अशरफ के पास हवाई जहाज़ है। तुम बृहस्पति ग्रह चलोगे या शनि?"

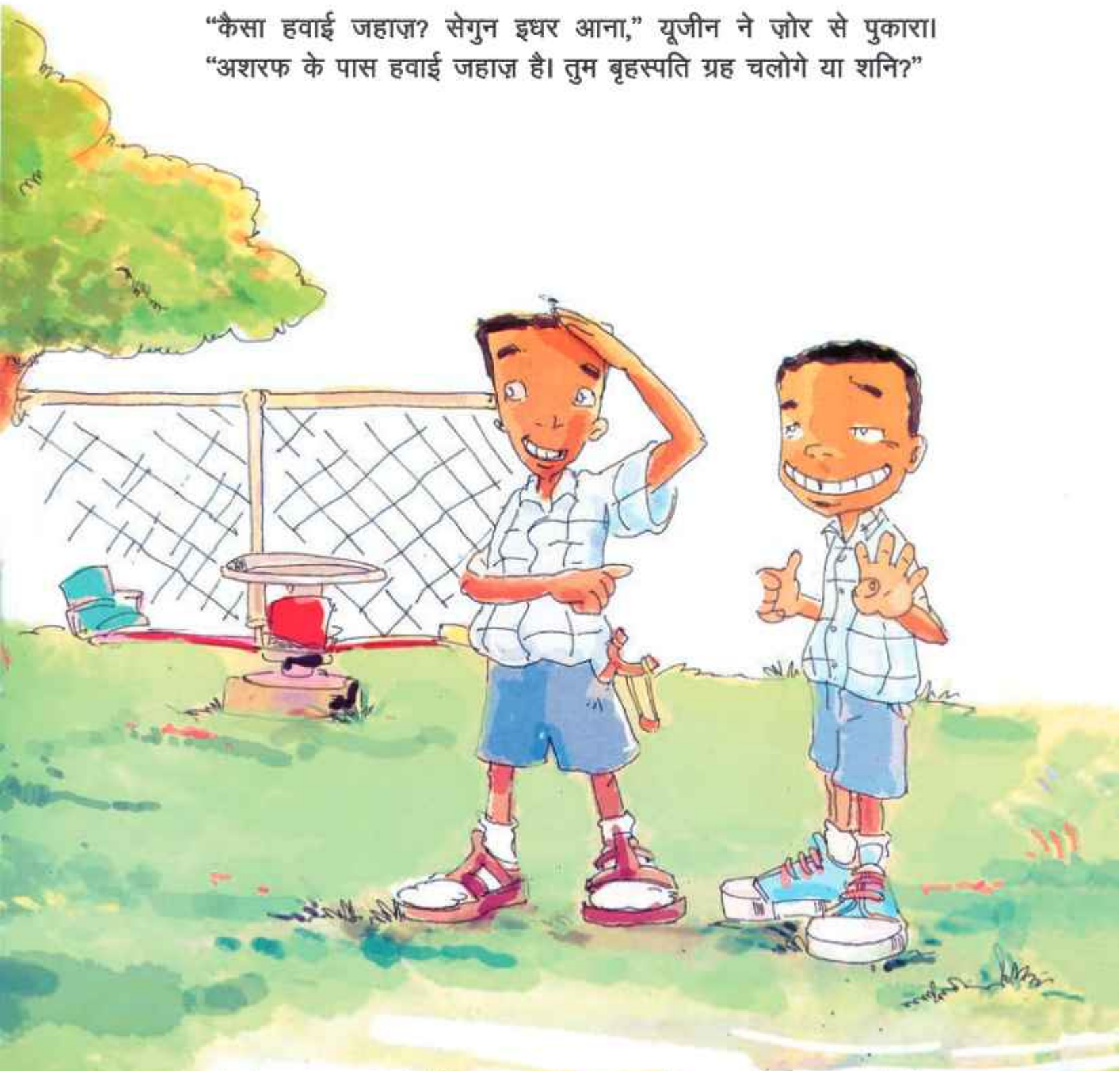

"देखो यार, सच्ची में मेरे पास हवाई जहाज़ है। चार लोग आराम से बैठ सकते हैं। आकर देखो तो," अशरफ पीछे पड़ा रहा।

"यह तुम्हारी उस टाइम-कैप्सूल जैसा तो नहीं है जो हमें भविष्य में ले जाने वाली थी?" सेगुन ने याद दिलाया।

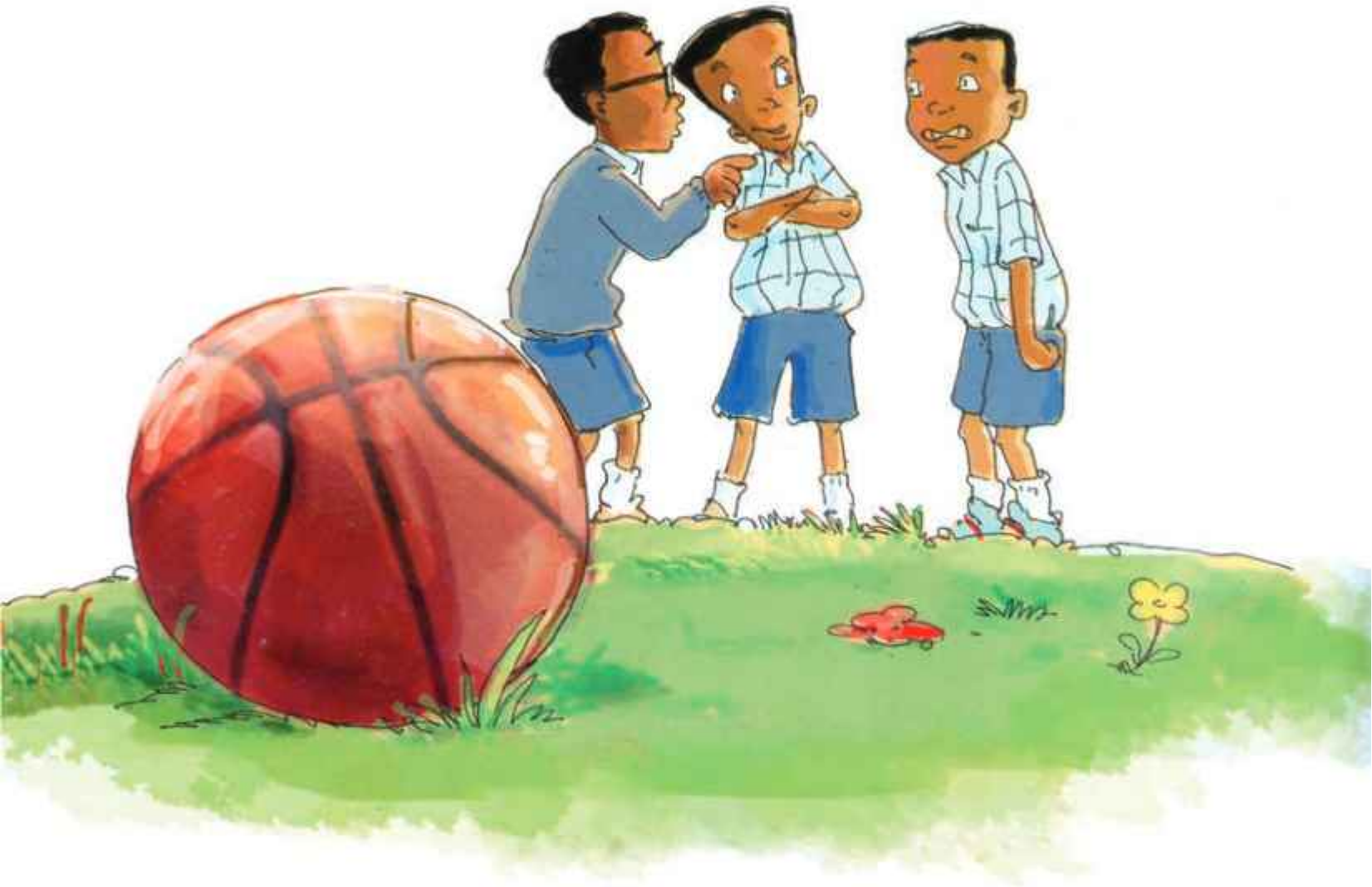

"साँसत में पड़ गया था मैं। सोचा था कि बस सोकर उठूँगा और दो क्लास आगे पहुँच जाऊँगा। पढ़ना-लिखना छोड़ दिया था मैंने, नम्बर आए ज़ीरो बटा भेली। या फिर यह कुछ वैसा है जब अपने पापा का रेडियो खोल-खाल दिया था तुमने? कहा था कि रेडियो फ्रीक्वेंसी ऐसी तरंगों में बदल जाएगी जो हमें गायब कर देंगी," यूजीन बोला।

"अरे हाँ!" सेगुन ने दाँत दिखाए। "मुझे लगा था हेडमास्टर तो मुझे देख नहीं सकता, लगा उसे जीभ चिढ़ाने और तरह-तरह के मुँह बनाने। संडे को भी स्कूल में रुकने की सज़ा मिली थी। अशरफ तुम भी ना बस, कभी मानते ही नहीं!"

"आ जाना यार, इस बार मुझे फॉर्मूला मिल गया है," अशरफ जमा रहा।

"मुसीबत में डालने का फॉर्मूला," सेगुन ने यूजीन को कुहनी मारी। "पर मैं आ जाऊँगा, सिर्फ तुम्हारी माँ का लज़ीज़ चॉकलेट केक खाने।"

"चॉकलेट?" यूजीन चीख पड़ा। "मैं भी आ रहा हूँ!"

तीनों दोस्त मैदान की तरफ चल दिए जहाँ बाकी क्लास गप्प मारने में मशगूल थी।

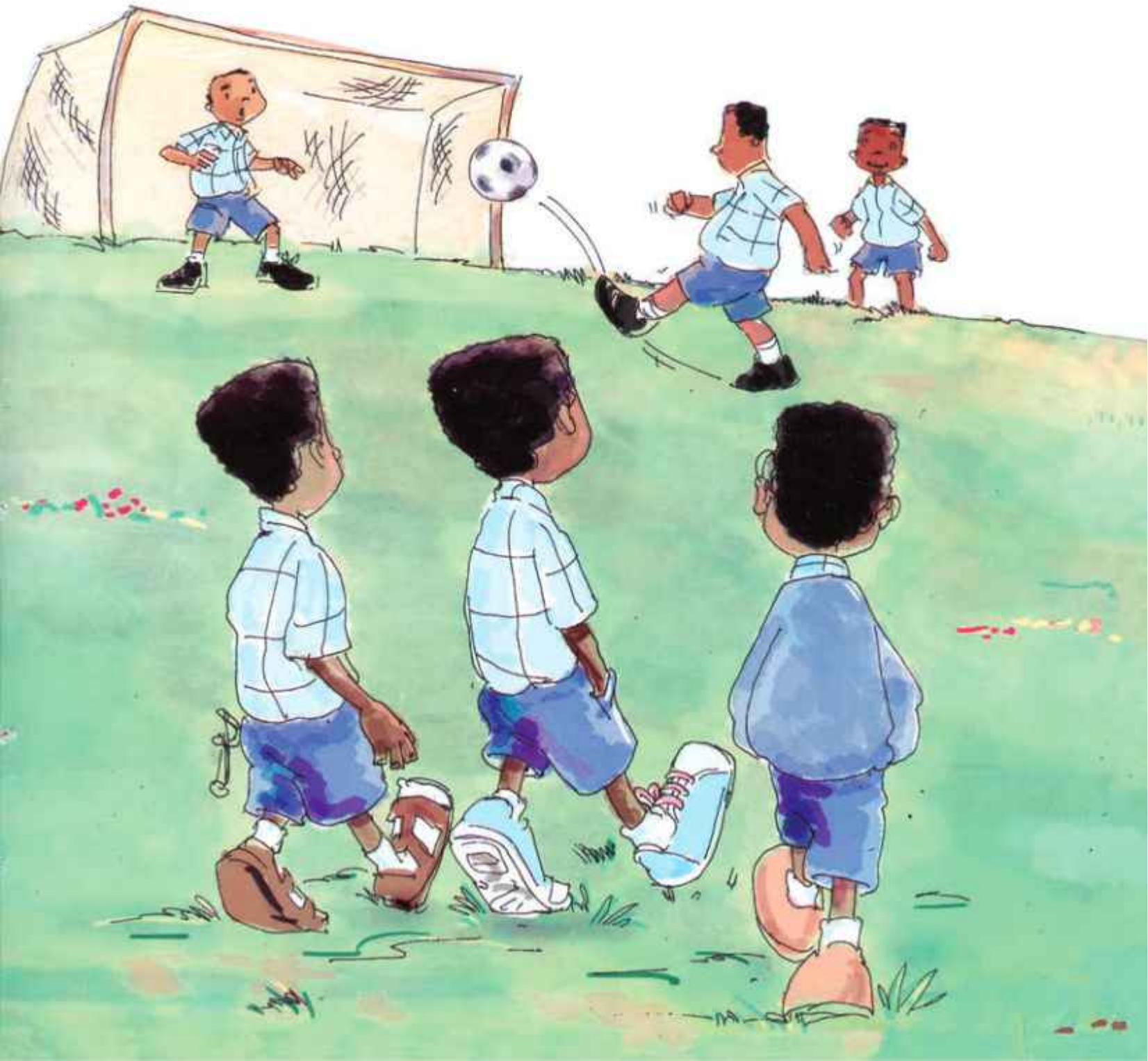

"आ गए तीन तिलंगे," साइमन ने घोषणा की। "न जाने क्या खिचड़ी पक रही है इस बार – कोई नई खुराफात।"

"अबे छोड़ो उसे," अशरफ बोला, "और शाम के बारे में कुछ मत बताना।"

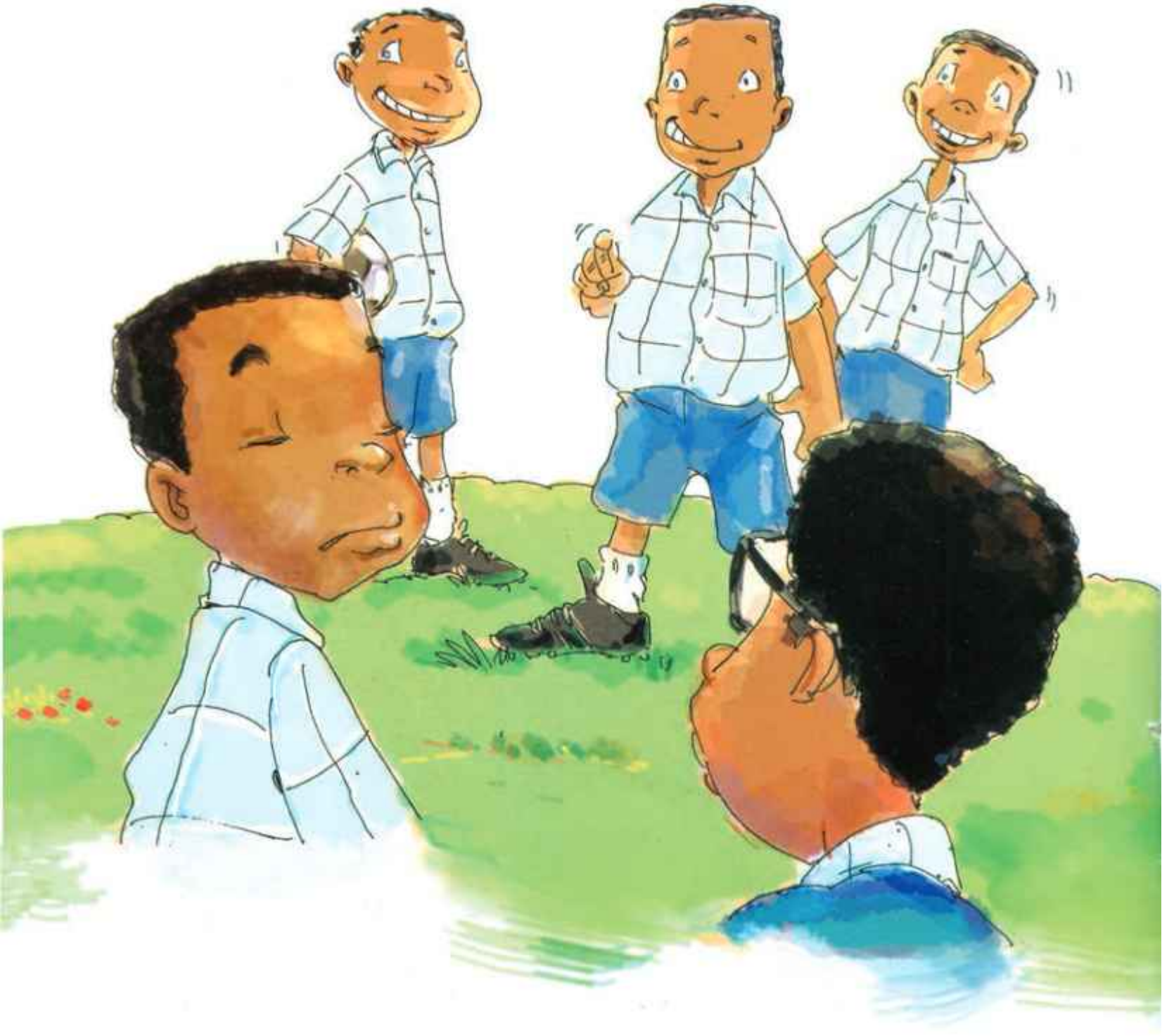

"साइमन! अशरफ का नया उड़नखटोला देखने चल रहे हो? उसमें बुकिंग करा सकते हैं, जहाँ जाना हो। मुझे तो लागोस का मौसम पसन्द है, और इन दिनों कानो की रेत भी बहुत सुन्दर होती है," सेगुन ने पुकारकर कहा।

"क्या ज़रूरत थी यह करने की?" अशरफ उखड़कर चल दिया।

"सॉरी यार," सेगुन अशरफ के पीछे दौड़ा, "पर कितने तो तुम्हारे प्रयोग और आविष्कार टाँय-टाँय फिस्स हो गए।"

"मैं तो समझता था कि हम दोस्त हैं। कुछ भी हो जाए तुम्हें मेरा साथ देना चाहिए," अशरफ भुनभुनाया। वह अब भी गुस्सा था।

"देखो, मैं पक्का पहुँच जाऊँगा," सेगुन बोला। वो क्लास की तरफ लौटने लगे।

अशरफ मन में खूब खुश हुआ कि उसके दोस्त उसे एक बार फिर मौका देने को तैयार थे। बाकी का दिन तो फट से निकल गया।

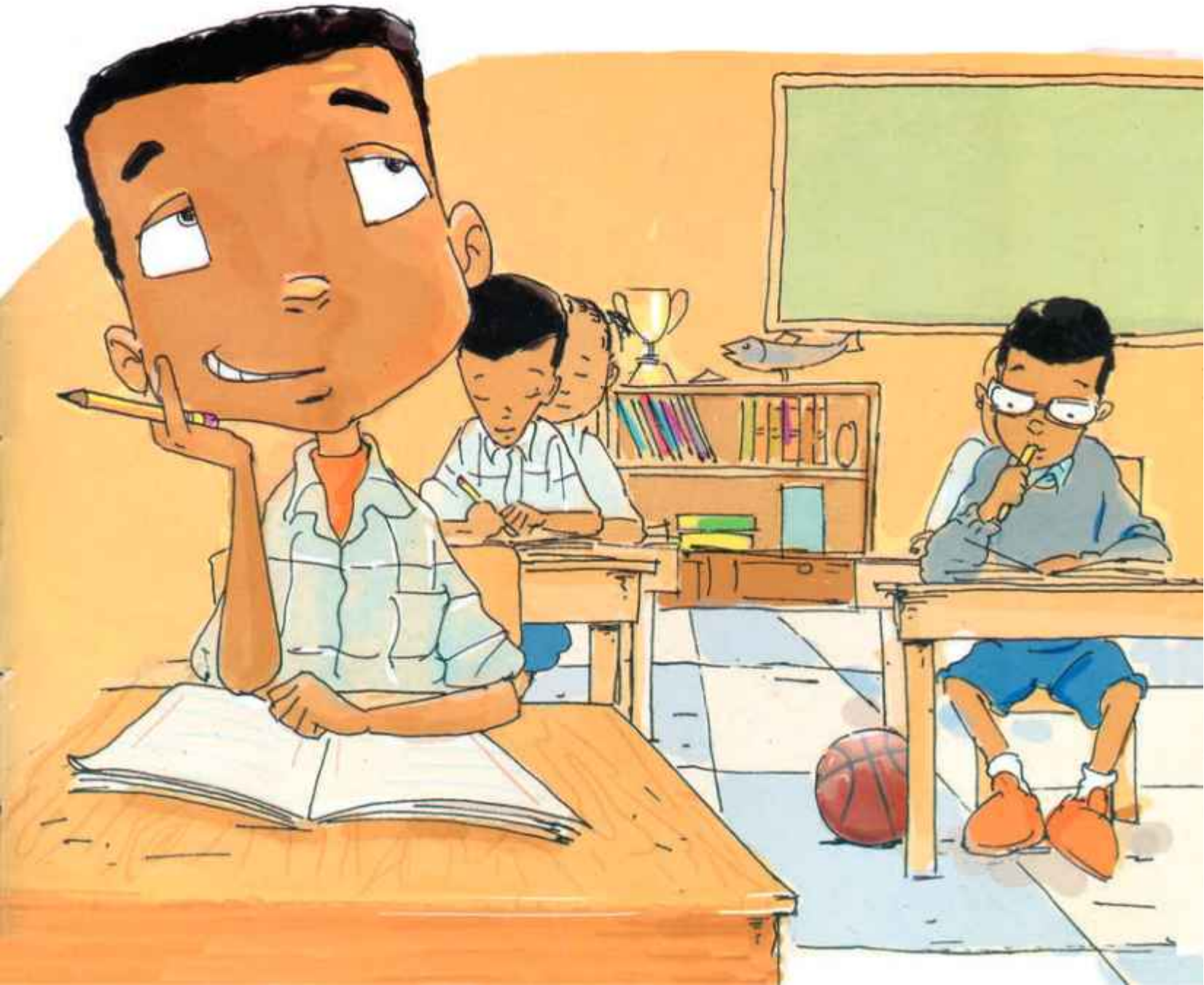

जल्द ही घर जाने का समय हो गया। बस घर के सामने रुकी नहीं कि अशरफ अन्दर भागा। दोनों पक्के दोस्तों के लिए उसे हवाई जहाज़ पर आरामदेह सीटें लगानी थीं।

वह बैठकखाने गया और माँ की पसन्दीदा बैंगनी गद्दियाँ उठा लीं। कुछ सुतली भी चाहिए थी ताकि टेक-ऑफ के समय गद्दियाँ अच्छे से बँधी रहें। उसे मालूम था वह कहाँ मिलेगी – पिताजी औज़ार वाले बक्से में हमेशा सुतली रखते थे।

अब बस कुछ नाश्ते-पानी की जुगाड़ करना बाकी था। माँ का चॉकलेट केक बढ़िया रहेगा, पर उसे रखने के लिए दो मेज़ें चाहिए थीं।

उसे याद आया कि उसके पास दो गोल टोपियाँ थीं। अगर हवा न चले तो वे खुद से ही खड़ी रह सकती थीं – नाश्ता रखने के लिए एकदम फिट! अब तो बस हेलमेट सही कर लो और कॉकपिट में बैठकर दोस्तों का इन्तज़ार करो।

अशरफ ने अपना पीला साइकिल हेलमेट सम्हाला और पिछवाड़े जा पहुँचा। उसने कुछ देर अपने आविष्कार को निहारा जो पूरी भव्यता के साथ खड़ा था।

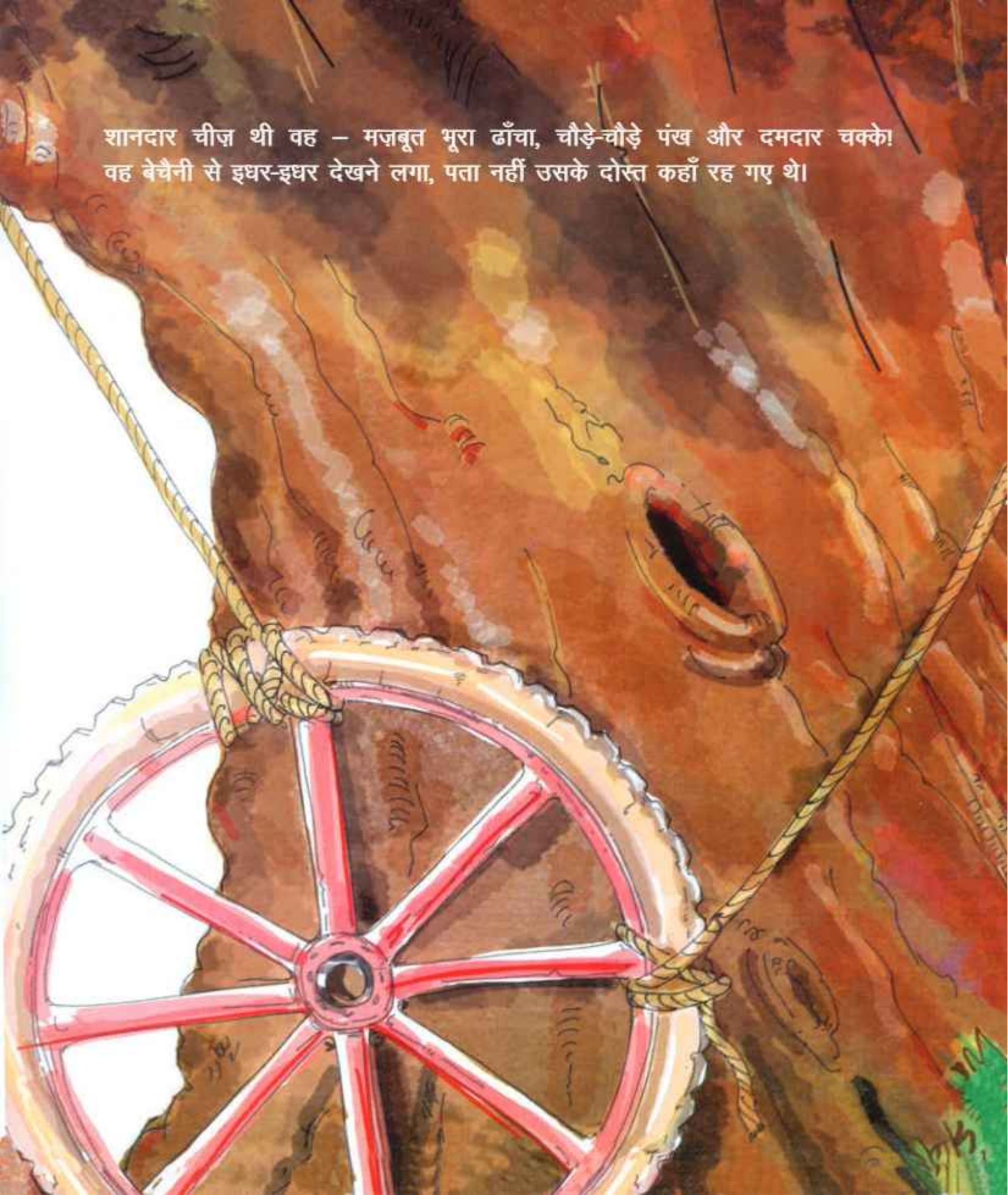

शानदार चीज़ थी वह – मज़बूत भूरा ढाँचा, चौड़े-चौड़े पंख और दमदार चक्के! वह बेचैनी से इधर-इधर देखने लगा, पता नहीं उसके दोस्त कहाँ रह गए थे।

"अशरफ! कहाँ हो यार? ये बढ़िया नहीं हुआ तो देखना। पापा के साथ फुटबॉल मैच देखना था, उसे छोड़कर आया हूँ," सेगुन ने आने का ऐलान किया।

"अरे मज़ा आ जाएगा तुम्हें। इधर तो आओ, मैं पीछे हूँ," अशरफ ने जवाब दिया।

हेलमेट पहनता हुआ वह जल्दी-जल्दी कॉकपिट में चढ़ गया। जब तक दोस्त लोग पीछे पहुँचें वह पूरी तरह तैयार रहना चाहता था। उसने पंखों को, चक्कों को जाँचा – उड़ान के लिए सब ठीकठाक है ना?

"जल्दी आओ, खाने से पहले लौटना भी है!" उसने ज़ोर से पुकारा।

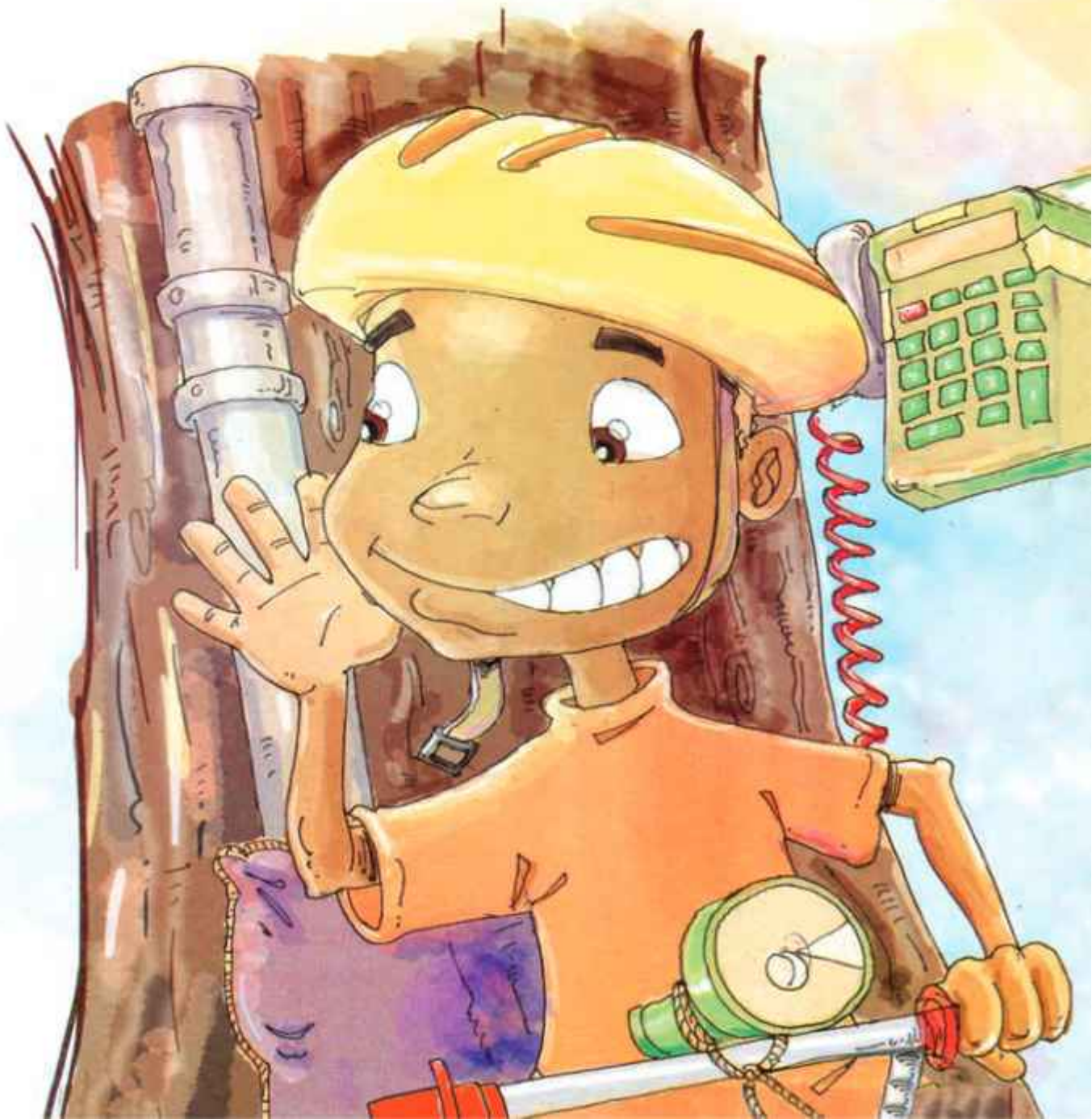

अशरफ ने सुना – एक धड़धड़ाहट उसकी तरफ आ रही थी। वो पास आ रही थी और बढ़ती जा रही थी। चक्कर क्या है यह देखने के लिए उसने जो गर्दन निकाली तो अपने नाज़ुक कॉकपिट की खिड़की से गिरते-गिरते बचा।

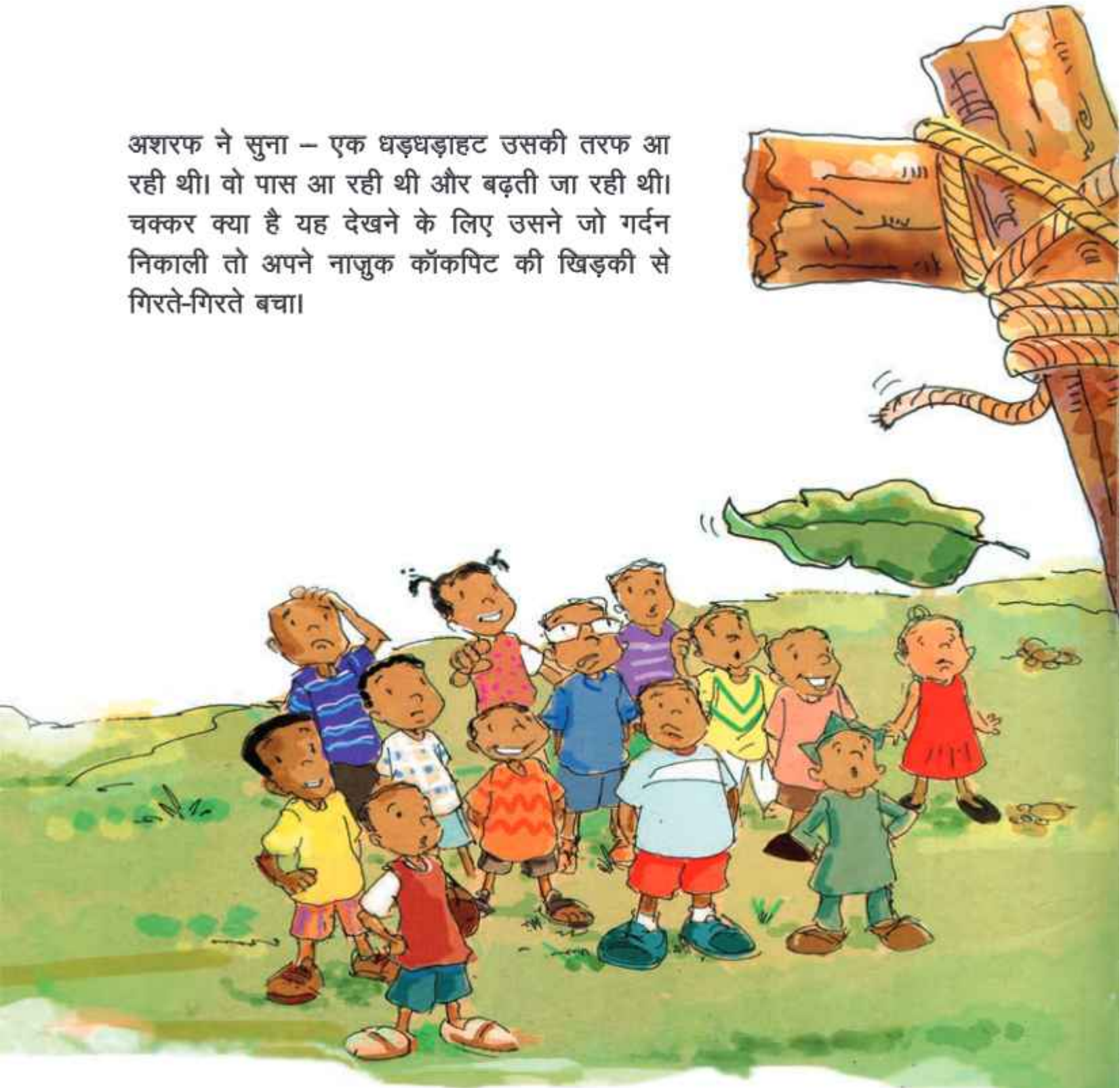

"क्या चल रहा है, सेगुन? यूजीन, तुम कर क्या रहे हो?" उसने घबड़ाहट में पूछा। अशरफ को अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हुआ। सैकड़ों बच्चे पिछवाड़े को रौंदते हुए उसकी ओर चले आ रहे थे।

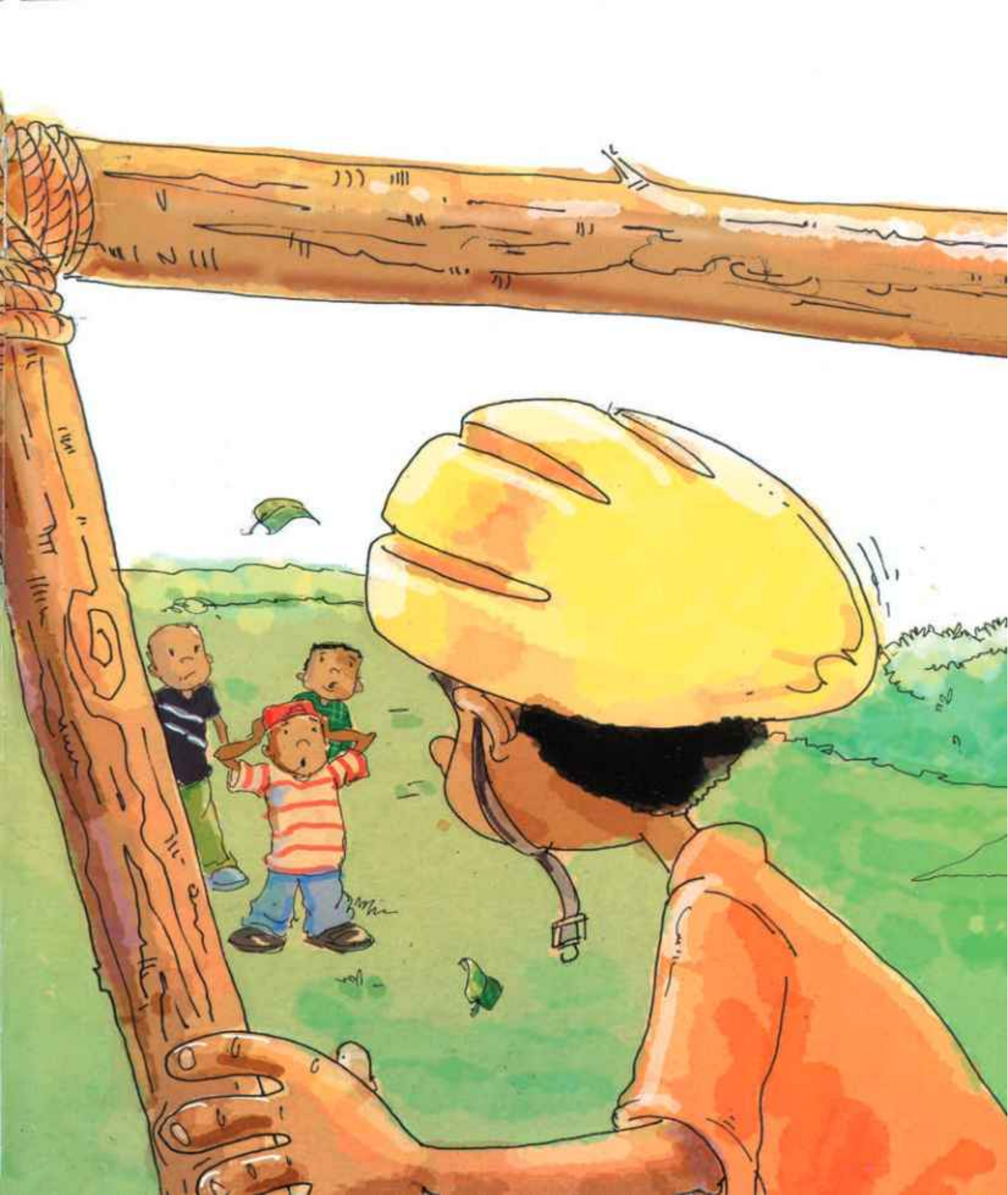

हर तरफ बच्चे ही बच्चे थे। सबकी नज़र ऊपर अशरफ पर थी। वे सब के सब कुछ-कुछ बोले जा रहे थे।

यूजीन और सेगुन भीड़ को ठेलकर कुछ आगे आए ताकि अपने दोस्त को ठीक से देख पाएँ। वह आम की एक ऊँची-सी डाल पकड़कर बैठा हुआ था। पास की दो डालों पर टोपियों में एक-एक चॉकलेट केक रखा हुआ था।

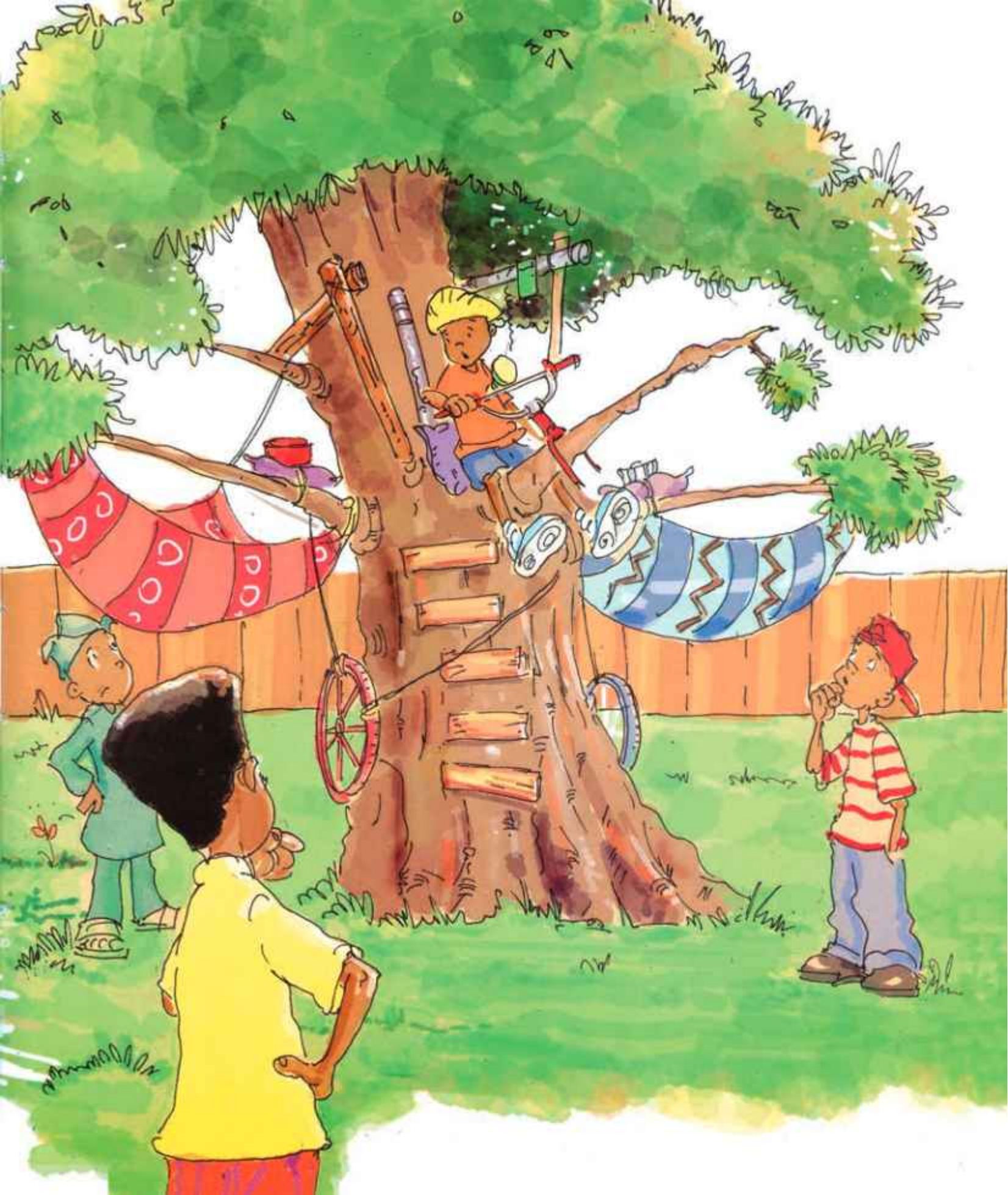

"इतना तो है कि तुम सोचते बड़ा धाँसू हो," सेगुन बोला, "आओ, अपना केक ले लें।"
दोनों लड़के पेड़ पर चढ़ने लगे ताकि अशरफ तक पहुँच जाएँ।

"काहे का उड़नखटोला," बच्चे भिनभिनाए। "ये तो बस पेड़ है।"
निराश होकर वे एक के बाद एक पलटकर जाने लगे।

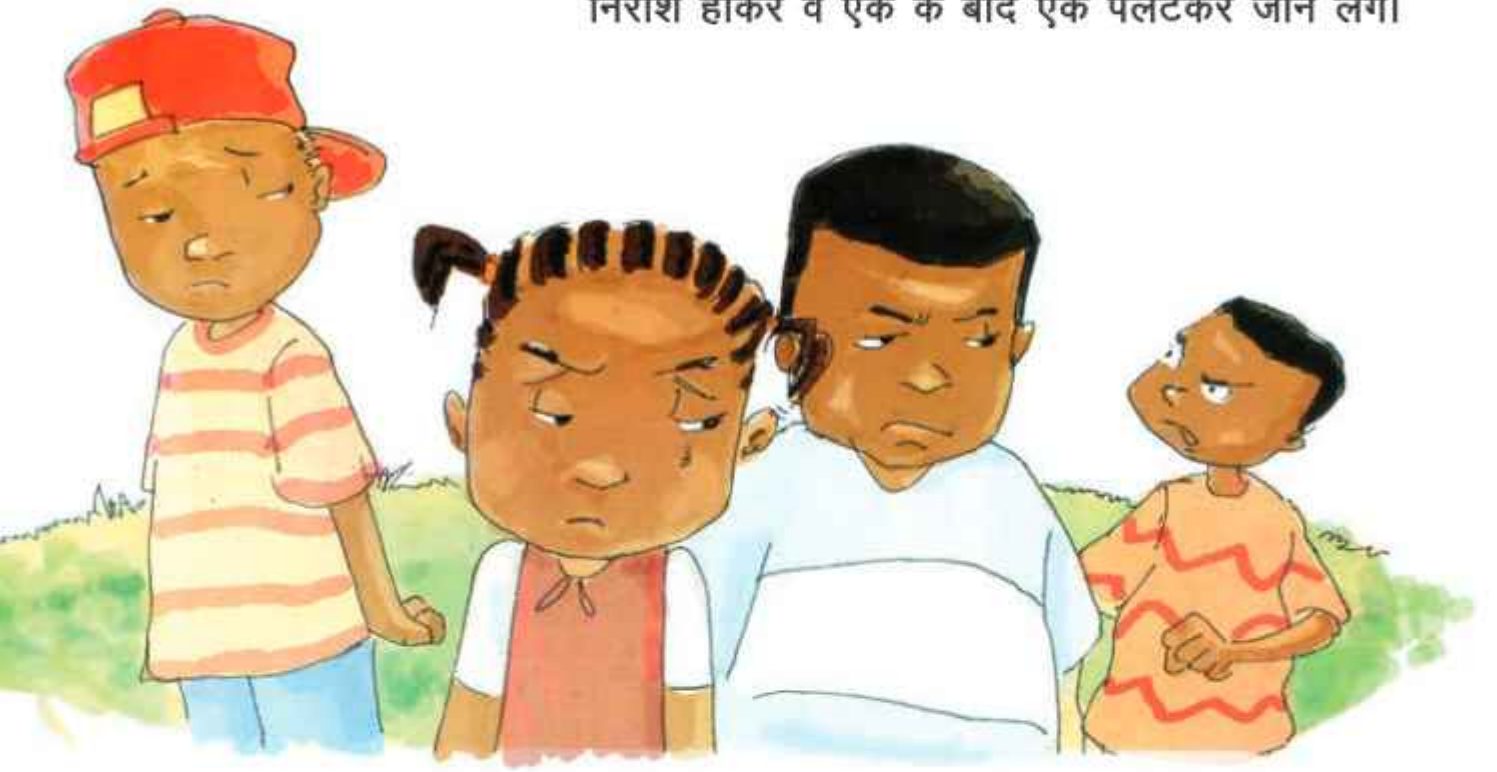

"अशरफ, लोगों का ध्यान खींचना तुम्हें खूब आता है।
और केक गज़ब का है," यूजीन बोला।

अशरफ गुमसुम अपने हवाई कॉकपिट में बैठा रहा। "तुम्हें सबको नहीं बताना चाहिए था। अब मैं किस मुँह से स्कूल जाऊँगा!" उसने ड्रामाई अन्दाज़ में कहा।

"अशरफ, मुझे तुम्हारे ऊट-पटांग विचार अच्छे लगते हैं। और बड़े होकर शायद तुम सचमुच में ये सब चीज़ें बना पाओ," सेगुन ने उसका हौसला बढ़ाया। "फिलहाल तो हम तुम्हारी मदद कर देंगे, पर अन्तरिक्ष में जाने के लिए तुम्हें पेड़ से कहीं ज़्यादा की ज़रूरत होगी।"

"मेरी विज्ञान वाली किताब से हम आविष्कार खोज सकते हैं, और शायद किसी छोटी-मोटी चीज़ से शुरुआत कर सकते हैं, जैसे सूरज की गर्मी से अण्डा उबालना," यूजीन भी सहमत था।

"तुम दोनों बस कमाल हो," अशरफ ने उन्हें भींच लिया।

"अरे सम्हल के! वरना सारे पेड़ से नीचे आ जाएँगे," यूजीन ने चेताया। "और फिर अशरफ को एक तुरत-फुरत पैराशूट बनाना पड़ेगा हमें बचाने के लिए," वह हँस पड़ा। तीनों दोस्त नीचे उतरने लगे।

अशरफ का उड़नखटोला
ASHRAF KA UDANKHATOLA

कहानी: फातिमा अकिलु
चित्र: मुस्तफा बुलामा
अँग्रेज़ी से अनुवाद: सुमित त्रिपाठी

© Originally in English as *Ashraf: The Flying Saucer* published by Mockingbird Books in 2011

हिन्दी अनुवाद © 2012 एकलव्य
फातिमा अकिलु की अनुमति से प्रकाशित

इस किताब के किसी भी भाग का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से कॉपीलेफ्ट चिह्न के साथ मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य के ज़रिए लेखक को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार की अनुमति के लिए एकलव्य तथा लेखक से सम्पर्क करें।

पहला संस्करण: जुलाई 2012 (5000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रण: फरवरी 2015 (5000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रण: मई 2017 (3000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रण: फरवरी 2018 (3000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रण: जनवरी 2019 (3000 प्रतियाँ)
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2020 (3000 प्रतियाँ)
छठवाँ पुनर्मुद्रण: फरवरी 2022 (3000 प्रतियाँ)
कागज़: 100 gsm मैपलिथो और 300 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-81300-45-9
मुल्य: ₹ 80.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in/books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल
फोन: +91 755 268 7589

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा व जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) और *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान व बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित व प्रकाशित की हैं।

इस किताब की सामग्री व सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर व उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क:
एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)

का उड़नखटोला

अशरफ की कल्पना विज्ञान से लबालब है। नित नए खयाल, नित नए प्रयोग। इस दफा शोर है उसकी बनाई उड़ने वाली मशीन का। देखें, यह वैज्ञानिक उठा-पटक क्या रंग लाती है।

एकलव्य
मूल्य: ₹ 80.00
9 789381 300459